आत्म में नहीं, समूह में विश्वास करता है हमारा आदिवासी समाज: बी. रघु

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मेलन में शामिल प्रतिभागी और अतिथि वक्ता। • आयोजक

- दो दिवसीय आदिवासी सम्मेलन का हुआ समापन
- साहित्य अकादमी और संस्कृति परिषद ने किया आयोजित

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायपुर: न्यू सर्किट हाउस में चल रहे दो दिवसीय अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मेलन के दूसरे दिन की शुरुआत आलेख पाठ से हुआ। वक्ताओं ने विरासत की रक्षा के लिए आदिवासी साहित्य का वैभव विषय पर अपनी बातें रखीं। इस दौरान बी. रघु ने कहा, आदिवासी साहित्य की कोई केंद्रीय विधा नहीं है। आदिवासी साहित्य में आत्म कथात्मक लेखन, केंद्रीय स्थान नहीं बना सका, क्योंकि स्वयं आदिवासी समाज 'आत्म' में नहीं, समूह में विश्वास करता है।

आदिवासी साहित्य आदिवासी आंदोलन की परंपरा और स्वाधीनता आंदोलन में आदिवासियों की भागीदारी से जुड़ी कहानियों को सामने लाता है और बताता है, कि किस प्रकार आदिवासी आंदोलन साम्राज्यवाद के साथ सामंतवाद से भी लड़ने के कारण ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। आदिवासी साहित्य उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाता है। मौखिक साहित्य इसका मूलाधार है। पुरखा साहित्य आदिवासी समाज में सैकड़ों वर्षों से जारी मौखिक साहित्य की परंपरा है।

विशेषज्ञ जितेंद्र वसावा ने कहा कि आदिवासी समुदाय में धान की फसल की कथा बुजुर्गों द्वारा सुनाई जाती थी। इसके अलावा कथाएं महिला केंद्रित होती हैं। आदिवासी साहित्य में सामुदायिक संबंधों की मजबूती की बात होती है, साथ ही बहनों के प्रति जिम्मेदारी और बुजुर्गों का सम्मान, मानवता के प्रति संवेदना दिखाई देती है। जितेंद्र वसावा ने इस सत्र में नर्मदा घाटी के पश्चिमी तट पर फैले भीली क्षेत्र पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा, इस क्षेत्र का प्राचीन साहित्य व इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता, जबकि इनके पास समृद्ध साहित्य मिलते हैं। प्राचीन समय से गाथा पूजा करने की परंपरा थी, अनेक गीत गाए जाते थे, जो पर्व, कृषि, विवाह, प्रेम पर आधारित हैं। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव, डा. एन सुरेश बाबू धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन जय सिंह ने किया। किरण नरूटी ने बस्तर की ज्ञान परंपरा पर कहा, आदिवासी ज्ञान प्रकृति से प्राप्त करते हैं। वे पशु, पक्षी, पेड़, पौधों की भाषा को समझेंगे। जंगलों में रहने वाले पक्षियों की बोली से मौसम की जानकारी मिल जाती है ऐसे ही पशुओं, कीट पतंगों के व्यवहार से प्राकृतिक घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है। सत्र की अध्यक्षता पी शिवरामकृष्ण ने की।